

काहे बनो अंजान
केवल मर्कः को सुमर लो रे
पाँच तत्व को पिंजरा रे
जामें पंद्ही अनमोल
लख चौरासी भटको
बोले मीठे बोल

केवल मर्कः

बिना डोर को पंद्ही रे
उड़े सब आकाश
माया में जो फस रओ
करों का विश्वास

केवल मर्कः

पवन वेग से ज्यादा रे
तेरे मन की उड़ान
विधि को लेख मिटेन
इतनी तेँ जान

केवल मर्कः

जम द्वारे लो आहें रे
करो कोट उपाय
भव तरवे में लोहे
करहें माई सहाय

केवल मर्कः

चारु धाम तें भटको रे
मिलो न संतोष
मन भीतर से मैलो
ये में के को दोष

केवल मर्क ---

भीतर मन खों माँजो रे
दिखे जग उजयार
सूने पड़े सब कोठा
खोलो सबरे द्वार

केवल मर्क ---

जगमग ज्योति रे
जले हृदय बीच
रें सो बगीचा लगो है
अँसुअन से सींच

केवल मर्क ---

कदली वन खों देखो रे
फरे रुकई बार
येँसई नरतन तेरो
मिलो रुकई बार

केवल मर्क ---

जग है खिलौना तेरो मर्क
चाहे जैसे नचाव
फरे "श्री बाबा श्री" भँवर में
मैया दौड़ो बचाव

केवल मर्क ---